ISBN : 978-81-968378-0-8

Perspectives of Education

Ojaswinee Pal

CONTENTS

1. **Perspectives of Education: A Lifelong Learning**
   Ojaswinee Pal 1

2. **Curriculum and its Relevance**
   Dr. Indu 6

3. **Education System: A Critical Analysis**
   Dr. Pragati 33

4. **Education Should be "Learning Centered" -Need to Empower**
   Dr. G. Jagadishwar 45

5. **Analysis of Value System and Changing Purpose of Education**
   Dr. Sakshi Gupta & Dr. Meenakshi Sharma 52

6. **The Changing Purposes of Education in Kerala in the Context of Migration of Youths**
   Dr. Sujith AS 60

7. **Islamic Curriculum: Challenges and Relevance in the Modern Times**
   Dr. Fauzia Maraam 66

8. **A Study on Paradigm Shift in Management Education**
   Dr. Meenakshi Sharma & Dr. Sakshi Gupta 75

9. **National Education Policy – 2020: Reforms in Higher Education in India**
   Dr. Raju Prajapati 88

10. **The Changing Role of Education in Contemporary Scenario**
    Dr. Aasim Mir 100

11. मानसिक योग्यताओं से सम्बन्धित विभिन्नताएँ
    डॉ. भुपेन्द्र कौर 107

12. भारतीय संस्कृति एवं शैक्षिक दृष्टीकोण : एक अध्ययन
    वन्दना कुमारी 115

मानसिक योग्यताओं से सम्बन्धित विभिन्नताएँ

डॉ. भुपेन्द्र कौर

शिक्षाशास्त्र विभाग, आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (यू0पी0)

Email- srsingh2472@gmail.com

DOI- 10.5281/zenodo.14034084

परिचय–

संसार में सामान्य से अलग भी कुछ बालकों की श्रेणीयाँ पाई जाती हैं जिन्हें विशिष्ट बालक कहा जाता है। पुनः इन विशिष्ट बालकों को इनकी विशेषताओं के आधार पर दो वर्गो में विभाजित किया जा सकता है– प्रतिभाशाली और मंद बालकों को अलग श्रेणियों में रखा जा सकता है। यहाँ हमारा उददेश्य मानसिक योग्यता के आधार पर विशिष्ट बालकों का अध्ययन करना है। अतः सामान्य रूप में बालकों को कई वर्गों में बाँटा जा सकता है।

1. शारीरिक दृष्टि से विकलांग

   (क) संवेदीय दोष–गूँगे, बहरे व अंधे,
   (ख) मस्तकीय पक्षपात–दिमागी न्यूनता,
   (ग) गठिया आदि।

2. मानसिक विकलांगता

   (क) मानसिक मंदन,
   (ख) अवधान दोष।

3. शैक्षिक विकलांगता

   (क) शैक्षिक पिछडापन,
   (ख) अधिगम निर्योग्य

4. सामाजिक विकलांगता

   (क) सुविधा वंचित,
   (ख) कुसमायोजिम,
   (ग) समस्या वाचक,
   (घ) बाल अपराधी,
   (च) सांवेगिक अस्थिरता।

इस अध्याय में उन बच्चों के विषय में अध्ययन करेंगे जिनमें संज्ञानात्मक अक्षमताएँ उपस्थित हैं। शिक्षा से सम्बन्धित होने के कारण मानसिक योग्यताएँ व अयोग्यताएँ प्रभाव डालती हैं। मानसिक रूप से हम बालकों को निम्न प्रकार वर्गीकुत कर सकते है–

मानसिक योग्यताओं से सम्बन्धित विभिन्नताएँ

1. सकारात्मक

(ख) रचनात्मक,
(ग) शैक्षिक दृष्टि से उच्च।

2. नकारात्मक

(क) अधिगम असमर्थ,
(ख) पिछडे बालक,
(ग) मंद बुद्धि।

यहाँ पर पाठ्यक्रमानुसार मानसिक विभिन्नताओं के आधार पर बालकों के सकारात्मक व नकारात्मक पहलुओं का अध्ययन करेंगे–

मनोविज्ञान के अनुसार प्रत्येक बालक में बुद्धि पाई जाती है। परन्तु बुद्धि का मापन किया जाने पर ज्ञात होता है कि सभी बालको की बौद्धिक योग्यता अलग–अलग होती है। बालकों में न सिर्फ बौद्धिक योग्यता अलग होती है बल्कि बालक की अन्य विशेषताओं का प्रभाव भी उसे अन्य व्यक्तियों से अलग पहचान दिलाता है। इसे हम व्यक्तिगत भिन्नता कहते हैं। कभी–कभी व्यक्तिगत भिन्नता का प्रभाव शैशवास्था में दिखलाई नही देता परन्तु धीरे–धीरे यह व्यक्तिगत भिन्नता नजर आने लगती है, जैसे सभी बालक पढने में एक समान उपब्धियाँ प्राप्त नहीं कर पाते। इसका कारण उनकी अपनी विशेषताएँ या कमियों का पाया जाना है। यहाँ इन्हीं व्यक्तिगत संज्ञानात्मक भिन्नताओं में से कुछ प्रमुख भिन्नताओं का अध्ययन करेंगे।

अधिगम असमर्थता–

अधिगम असमर्थता उन बालकों में पाई जाती है जो अधिगम अपंग या असमर्थ होते हैं। अधिगम असमर्थ बालक की शैक्षिक योग्यता इस न्यूनता के कारण प्रभावी होती है। यह बालक अधिगम असमर्थता का सामना बालक बिलकुल उसी प्रकार करता है जैसे शारीरिक रूप से विकलांग बालक करता है।

कावेले एवं फारनेस (1966)– "अधिगम की दृष्टि से अक्षम या अपंग व्यक्तियों में बहुत अधिक विभिन्नताएँ देखने को मिलती हैं परन्तु सभी के सामने यह एक समस्या अवश्य रहती है कि वे अधिगम अक्षम या अपंग न हो कर उनकी भाँति कुशलता से अधिगम नहीं कर पाते। यद्यपि वे अधिकतर बौद्धिक रूप से सामान्य ही होते हैं। परन्तु फिर भी उनकी शैक्षिक उपलब्धि का स्तर उनके सहपाठियों से कम ही पाया जाता है। कुछ को गणित अधिगम में अत्यधिक कठिनाई होती है। परन्तु अधिकांश को पढने और लिखने के क्षेत्र में सिद्धहस्त होना बहुत बडा सिरदर्द बन जाता है।"

अधिगम असमर्थता पर प्रकाश डालते हुए नेशनल जॉइन्ट कमेटी ऑन लर्निंग डिसएविलिटीज, यू. एस.ए. कहती है कि, "मूल रूप से अधिगम अक्षमता या अपंगता शब्दावली का प्रयोग उन विभिन्न प्रकार के विकारों के लिए होता है जिनसे आक्रान्त व्यक्ति सुनने–बोलने, पढने–लिखने, तर्क करने या गणितीय योग्यताओं को सीखने तथा उन्हें प्रयोग में लाने में गहन कठिनाईयों का सामना करता हुआ दिखाई देता है। इस प्रकार के सभी विकास व्यक्ति में ही अन्तर्निहित होते हैं और सम्भवतया केन्द्रीय स्नायु संस्थान में पाए जाने वाले दोषों के कारण पैदा होते हैं तथा जीवन में कभी भी इनकी परिणति हो सकती है। अधिगम अक्षमता के साथ स्व–नियमित व्यवहार क्रियाओं तथा सामाजिक प्रत्यक्षीकरण और अंतः क्रिया सम्बन्धी समस्याएँ भी देखने को मिल सकती हैं। परन्तु उनकी यह उपस्थिति अधिगम अक्षमताओं या अपंगता पैदा कर दे, ऐसी बात नहीं है। इसी प्रकार अधिगम अक्षमता या अपंगता में अन्य

ISBN : 978-81-968378-0-8

कई अक्षमताओं तथा अपंगताओं जैसे इन्द्रियजनित दोष, मानसिक पिछडापन, गहन संवेगात्मक हलचलया सामाजिक कुसमायोजन के दर्शन भी हो सकते हैं तथा कुछ बाह्य प्रभावी परिस्थितियों जैसे सांस्कृतिक पिछडापन और अधिगम अवसरों का अभाव आदि की उपस्थिति भी पाई जा सकती है। परन्तु अधिगम अक्षमता या अपंगता को इनकी उपज नहीं माना जा सकता।"

क्लीमेन्ट ने अधिगम असमर्थता से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करके अधिगम असमर्थता के अर्न्तगत 99 विशेषताओं की एक सूची प्रस्तुत की। जिनमें से विशेषताएँ ऐसी है। जो सभी अधिगम असमर्थता में पाई जाती है जो निम्न प्रकार हैं–

1. अतिक्रियाशीलता
2. प्रत्यक्षित–गतिक न्यूवता
3. सांवेगिक अस्थिरता
4. सामान्य समन्वय का अभाव
5. अवधान समस्या
6. प्रोत्साहनीय
7. स्मृति एवं चिन्तन व्यवधानित
8. विशेष शैक्षिक समस्याएँ
9. तंत्रिकीय अथवा विद्युतीय तंरगों में असमरूपता।

निम्न परिभाषाएँ अधिगम असमर्थता पर विस्तार से प्रकाश डालती है। इन परिभाषाओं के द्वारा अधिगम असमर्थता–

1. अधिगम असमर्थता का कारण व्यक्ति के आन्तरिक अवयवों–केन्द्रय स्नायु संस्थान की कार्य प्रणाली में असामान्ता या दोष के कारण होता है। जैसे–मस्तिष्क या स्नायु तंत्रिका के चोटिल होने से गति और प्रत्यक्षीकरण योग्यता व अधिगम पर प्रभाव पडता है।
2. अधिगम असमर्थता पा आन्तरिक कारकों के अलावा बाह्य कारकों का भी प्रभाव पडता है। बाह्य कारकों में मानसिक मंदता, सास्कृतिक पिछडापन, गरीबी, भुखमरी आदि। इन बाह्य कारकों का अधिगम अक्षमताओं व अंपगताओं पर प्रत्यक्ष प्रभाव नही पाया जाता।
3. व्यक्ति की अधिगम अक्षमताएँ, मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं पर विशेष प्रकार के विकार के रूप में प्रभाव डालती हैं।
4. अधिगम अक्षमता का अधिगम पर प्रभाव को असमर्थता के रूप में देखा जा सकता है। इस कारण अधिगम में न्यूनता आ जाती है। परिणामस्वरूप शैक्षिक अपलब्धि और योग्यताओं में अन्तर आ जाता है। इस न्यूनता को दूर करने के लिए विशेष प्रयास करने पडते हैं।
5. अधिगम असमर्थ बालकों में यह आवश्यक नही हैं कि बुद्धि की कमी होने पर वह शैक्षिक उपलब्धि में अपने सहपाठियों से पीछे ही रह जाते है।
6. अधिगम अक्षमता अनेक प्रकार की हो सकती है जैसे–ज्ञान को ग्रहण करने में असमर्थता, भाषा संबंधी संप्रेषण का समुचित विकास न होना, श्रवण, वाचन व लेखन में कठिनाई आदि।

ISBN : 978-81-968378-0-8

7. कभी–कभी अधिगम असमर्थता असथाई भी होती है। जैसे सीखने में अधिक समय लगाना। इन बच्चों को अधिगम असमर्थ की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।

अधिगम असमर्थ बालकों की पहचान

अधिगम असमर्थ बालक सामान्य बालक के समान ही दिखाई देते है। अध्यापक व माता–पिता थोडा–सा ध्यान देकर उनकी अक्षमता को पहचान सकते हैं। अधिगम असमर्थ बालकों की पहचान हेतु निम्नलिखित सुझावों पर अमल किया जा सकता है–

1. अधिगम असमर्थ बालक दैनिक कार्यो को करने में कठिनाई का अनुभव करता है। जैसे कक्षा कार्य को समय पर न कर पाना।
2. बालक सप्ताह, दिन, महीनों के नाम याद करने और लिखने में कठिनाई करता है।
3. अधिगम असमर्थ बालक प्रायः सुस्त दिखाई देता है।
4. ऐसे बालक दैनिक चर्या में परिवर्तन आने पर सन्तुलन नहीं रख पाते।
5. अधिगम असमर्थता एक विषय में न होकर कई विषयों में पाई जाती है।
6. संज्ञानात्मक विषयों को समझने में कठिनाई का अनुभव करना।
7. अधिगम असमर्थ बालक शब्दों व वाक्यों को शुद्धता से न तो बोल पाते है और न ही लिख पाते है।
8. शिक्षक की बात या निर्देशों को न समझ पाता।
9. सुनी हुई बात को दोहराने में असमर्थता।
10. दिशा ज्ञान की समझ नहीं होती।
11. पुस्तक पढते समय बीच–बीच के वाक्य छोड जाना।
12. अक्षरों को पढते समय क्रमबद्ध रूप में न पढ पाना। जैसे–जलेबी को जलेबी पढना आदि।
13. शब्दों को उल्टा पढना जैसे नम को मन बोलना आदि।
14. कार्यो में नियमितता नही पाई जाती। इन बालकों को देखकर प्रतिभाशाली जाग्रत होना प्रतीत होता हैं पर यह भ्रम होता है।
15. शब्दों को पूरा न पढ पाना जैसे गमन को गम पढना आदि।
16. अंको को उल्टा लिखना जैसे 6 को 9 लिखना आदि।

अधिगम असमर्थ बालकों के व्यावहारिक आंकलनों के लिए एनसीईआरटी नई दिल्ली ने निर्देशक की सेवाएँ उपलब्ध कराई हैं। जो अधिगम असमर्थ बालकों को पहचान, आंकलन व प्रशिक्षण देकर उचित वातावरण उपलब्ध कराने हेतु सहायक हो सकते है। अध्यापक ऐसे बालकों को पहचान कर विशेषज्ञों की सेवा ले सकता है।

अधिगम असमर्थता के कारण

अधिगम असमर्थता पर निम्नलिखित कारणों का प्रभाव पडता है–

1. **जैविक कारक–** अधिगम अक्षमता के लिए जैविक दोषों का प्रभाव उत्तरदायी माना जा सकता है। अधिगम असमर्थता से सम्बन्धित दोष स्नायु संस्थान के विकारों के कारण होते है। स्नायु संस्थान हमारे शरीर की संवेदन तंत्रिकाओं से सम्बन्धित होता है। बालक

ISBN : 978-81-968378-0-8

यदि दुर्घटना के कारण मस्तिष्क में चोट पहुँचती है, या जन्म के कारण ऑक्सीजन की न्यूनता शिशु में मस्तिष्क से सम्बन्धित विकास उत्पन्न कर देती है। इस कारण अधिक क्षमता प्रभावित होती है। साथ हा स्नायु–संस्थान समस्त शरीर का रीढ के चोटिल होने पर संवेदनशीलता प्रभाहवत होती है। संक्षेप में बालक के स्नायु संसथान की कार्यप्रणाली पर अधिगम क्षमता आधारित होने के कारण प्रभावित होती है।

2. **इन्द्रिय**– अधिगम असमर्थता मस्तिष्क की शिथिलता (एमबीयू) के कारण होती है। मुख्य नाडी केन्द्र में जब कोई विकार आ जाता है तो नाडियाँ उचित प्रकार से कार्य नहीं कर पातीं। नाडी बचपन में तेज बुखार, समय चोट लगने से प्रभावित हो कर विकृति का शिकार हो जाती हैं। यह विकृति दिमाग पर प्रभाच डालती हैअतः अधिगम असमर्थताएँ की सम्भावनाएँ बढ जाती हैं।
3. **वातावरण**– वातावरण भी अधिगम असमर्थता का महत्वपूर्ण कारक है। वातावरण में शारीरिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षिक वातावरण अधिगम पर प्रभाव डालते हैं। नशं की लत, गलत दवा, अत्यधिक भावुक होना, सामाजिक व सांस्कृतिक बहिष्कार, सिर पर चोट लगना आदि अनेक ऐसे कारण हैं जो बालक की अधिगम असमर्थता के लिए उत्तरदायी हैं।

अधिगम असमर्थ बाधित बालकों की समस्याएँ

अधिगम असमर्थ बालकों की जिन समस्याओं का सामना करना पडता है उनको जानना आवश्यक है ताकि बालक को समुचित दिशा में निर्देश दिए जा सकें। यह समस्याएँ निम्नलिखित हैं–

1. **ध्यान केन्द्रित न कर पाना**– ध्यान किसी भी कार्य हेतु आवश्यक है। अधिगम असमर्थ बालक किसी विषय पर ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाते या अधिक देर तक नहीं कर सकते। इस कारण उनकी परिक्षाएँ प्रभावित होती हैं जैसे दिए गए निश्चित समय में कार्य पूरा न कर पाना, भाषा को समझने में कठिनाई, विषय पर ध्याान का केन्द्रण न होना, आदि कारण उनकी योग्यता पर प्रश्न चिन्ह लगा देते हैं।
2. **स्मृति**– अधिगम असमर्थ बालक सूचनाओं को पुनः प्राप्त करने में सक्षम नहीं होते। वाक्यों को सुनना व ज्यों का त्यों ग्रहण करना, अक्षर व आकार को न पहचान पाना आदि अनेकऐसे कारक हैं जो अधिगम में बाधा डालते हैं। अतः अधिगम असमर्थ बालक पढने में पिछड जाते हैं।
3. **वाचन समस्या**– वाचन करने में अधिगम असमर्थ बालक को कठिनाई आती है। यह कठिनाई दो प्रकार से प्रभावित करती है यदि सामान्य प्रकार की कठिनाई है तो वाचन से समस्या आती है। अगर क्षति गम्भीर है तो बालक बिलकुल भी नही पढ पाता। शब्दों का उल्टा पढना जैसे गमला का लगमा, क्रम से न पढना अमरूद का अरमूद संख्या का उल्टा पढना जैसे 6 को 9 या M को W पढना आदि समस्याएँ होती हैं।
4. **लेखन समस्या**– लेखन से सम्बन्धित भी कई समस्याएँ इन बालको के सामने आती हैं। जिन्हें दो प्रकार से जाना जा सकता हैं–सामान्य रूप से बाधित बालक साफ–साफ नही लिख पव दूसरी गम्भीर समस्या से पीढित बालक लिखने में असमर्थ होते हैं। इन्हे विशेष विद्यालयों की आवश्यकता होती है।

ISBN : 978-81-968378-0-8

5. **सम्प्रेषण का ग्रहण न कर पाना–** इस प्रकार के बालक बात को सुनकर ठीक से ग्रहण नहीं कर पाते मौखिक व लिखित दोनों प्रकार से सम्प्रेषण ग्रहणता पर प्रभाव पडता है।
6. **संख्यात्मक अयोग्यता–** अधिगम असमर्थ बालक संख्याओं को उल्टा पढते हैं। एक सी आकृतियों वाली संख्याओं को पहचान नही पाते; जैसे–6 को 9 आदि। संख्यात्मक योग्यता से सम्बन्धित योग्यता भी दो प्रकार की होती है–सामान्य व गम्भीर। गम्भीर समस्याग्रस्त बालक को अलग प्रशिक्षण व शिक्षा की आवश्यकता होती है।

अधिगम असमर्थ बालकों के शिक्षण हेतु सिद्धान्त

हेविट और फोरनिस ने 1984 में कुछ सिद्धान्तों का सुझाव दिया था जो निम्न प्रकार से है–

1. धैर्य धारण करना
2. बहु इन्द्रियों पर आधारित साधनों का प्रयोग
3. सजीव शिक्षा
4. आशावादी दृष्टिकोण
5. संकेतों का उपयोग
6. आवश्यकतानुसार अभ्यास
7. पाठ्य वस्तु का मूर्त रूप
8. अवरोध रहित पढाना
9. क्रमानुसार बढाना
10. व्यवहार में स्वतन्त्रता

अधिगम असमर्थ बालकों की शिक्षा

मनोविज्ञान ने सामान्य जैसे दिखने वाले पर अधिगम असमर्थता की समस्या से ग्रस्त बालको की चिकित्सा और शिक्षा की ओर ध्यान गया। शिक्षा के लिए निम्न प्रकार की व्यवस्था की जानी चाहिए–

1. **अलग विद्यालय–** अधिगम बालकों में समस्या का गम्भीर रूप है तो इन बालकों को पहचान कर इनके लिए अलग विद्यालयों की व्यवस्था की जानी चाहिए। बच्चे की आवश्यकतानुसार उन्हें छोटे–छोटे समूह में बाँट कर शिक्षा प्रदान करनी चाहिए।
2. **अलग कक्षा–** विद्यालयों में अधिगम असमर्थ बालकों की समस्या को पहचान कर अलग–अलग कक्षाओं में उनकी विशेष आवश्यकताओं के अनुसार व्यवस्था करनी चाहिए।
3. **प्रशिक्षित अध्यापक–** पूर्व विदित जानकारी के अनुसार अलग–अलग समस्याओं से ग्रसित बालकों हेतु प्रशिक्षित व कुशल अध्यापकों की व्यवस्था की जानी चाहिए। सामान्य शिक्षक इन बचों की समस्या की गंभीरता को नहीं समझ पाते।
4. **वातावरण–** विद्यालय, समाज के वातावरण में पुन बालकों के समायोजन का प्रयास कराना चाहिए। क्योंकि इन बालकों को धैर्य के साथ प्रशिक्षित करने की आवश्यकता होती है। वातावरण का समायोजन इन बालकों में आत्मविश्वास की वृद्धि करने में सहायक होता है।
5. इन बालकों को पढाते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहि

(क) शिक्षण विधियों का प्रयोग।
(ख) सामाजिक गतिविधियों में भाग लेना।
(ग) चित्र द्वारा पढाना।
(घ) खेल विधि का प्रयोग।
(च) सरल से जटिल की ओर बढना।
(छ) भौतिक शिक्षा द्वारा अभ्यास कराना आदि।

पाठ्यक्रम

इन बालको की समस्या की प्रवृत्ति के अनुसार पाठ्यक्रम का निर्माण करना चाहिए। पाठ्यक्रम लचीला होना चाहिए। अधिगम असमर्थ बालकों की समस्याओं के निराकरण को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम का आयोजन करना चाहिए।

एनसीईआरटी व एससीईआरटी द्वारा बनाए गए पाठ्यक्रमों में इन बिन्दुओं पर विशेष ध्यान दिया गया है–

1. अधिगम असमर्थ बालकों की मुख्य कमी वर्तनी से सम्बन्धित होती है। अतः अभ्यास पुस्तक का प्रयोग करना चाहिए। जोर से बोलकर अभ्यास करना चाहिए।
2. इन बालकों का गणित कमजोर होता है। अतः तर्क के साथ कम्प्यूटर, ब्लैक बोर्ड, कैलकुलेटर, चार्ट आदि का अधिकतम प्रयोग करना चाहिए। छोटे–छोटे सवालों का अभ्यास लकडी के खिलौनों द्वारा करवाना चाहिए।
3. हस्तलेख में भी इन बालकों को समस्या आती है अतः पेन्सिल पकडने का उचित तरीका, कॉपी पर लिखना आदि सिखाना चाहिए।
4. अध्यापक की मुख्य भूमिका होती है। अतः अध्यापक का संयमी होना आवश्यक है व बालकों को प्रोत्साहित करने वाला दृष्टिकोण होना चाहिए।

अधिगम असमर्थ बालकों की पहचान

1. मैडिकल निरीक्षण–
2. टैस्ट द्वारा–इन बालकों को टैस्ट द्वारा भी पहचाना जा सकता है। जैसे–

(क) रेटिंग स्केल, इन्टरव्यू, चैकलिस्ट के द्वारा उनके व्यक्तिव को पहचानना।
(ख) योग्यता टेस्ट, आई.क्यू. टेस्ट आदि के द्वारा हम इन बालकों की पहचान कर इनकी चिकित्सा कर सकते हैं।

सन्दर्भ सूची–

1. भार्गव, महेश (2007), विशिष्ट बालक, आगरा : एच. पी. भार्गव बुक हाउस।
2. भार्गव विवके एवं बाबू अनिल, (2017) अधिगम एवं शिक्षण, आगरा : एच. पी. भार्गव बुक हाउस।
3. सिंह, बी. पी. एवं सिहं ओमपाल (2004), शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का विकास, मेरठ : लायल बुक डिपो।
4. अग्रवाल, रितु एवं शुक्ला, गीता (2014), बाल विकास एवं मनोविज्ञान, आगराः राखी प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड।

ISBN : 978-81-968378-0-8

Ojaswinee Pal is presently pursuing Doctor of Philosophy (Ph.D.) from Babu Banarasi Das University, Lucknow (U.P.). She completed her High School from S.D. GIC, Kannauj, Intermediate from KVM GIC, Kanpur, B.Sc. (CBZ) from A.N.D.N.N.M., Kanpur, M.Sc. (Bio-Tech) from CSJMU, Kanpur, B.Ed. from D.G. college, Kanpur, M.Ed. from Atarra Degree College, Atarra, Banda affiliated to Bundelkhand University, Jhansi. She has qualified UGC-NET Exam two times.

She has been participated in various types of competitions during her studies. She worked as Scout-Guide during her middle schooling. She has got Dr. Harish Nawal Samman in Avantika International Talent Search Competition. She has also got Shakti Vandan Samman on occasion of International Women's Day organized by S.R.S.T. College of Education, Ova, Jhanabad, Bihar in collaboration with Kalindi Prakashan, Azamgarh, U.P.

She participated and presented papers in various national and international seminars and conferences. She has contributed many research papers and articles in reputed national and international journals and edited books. She has also been an Editorial member of edited books. She is keenly involved in academic and extracurricular activities.

Published by

Risma Publishers

Darbhanga

E-mail : rismapublishers@gmail.com

Website:- www.rismapublishers.com

Mob- 780-80-74762, 829-80-74762

ISBN 978-81-968378-0-8

9 788196 837808

Rs. 550.00 2024